संक्षिप्त शोध सार

नाम: मंजू चतुर्वेदी

शोध निदेशक का नाम : प्रो. महेंद्र पाल शर्मा

विषय: सुषम बेदी तथा रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में चित्रित प्रवासी जीवन का तुलनात्मक अध्ययन

विभाग: हिंदी

KEYWARDS: PRAWAS, PARWASI JIVAN,PRAVASI SAHITIYA,SHUSHAM BEDI, RAMDEV DUNDHAR BHUMIKA

वाइवा की तिथि: 08.04.2021

इस शोध प्रबंध में सुषम बेदी तथा रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में चित्रित प्रवासी जीवन का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि प्रवास मानव स्वभाव में अन्तर्निहित एक ऐसी अभिवृत्ति होती है जो अवसर तथा समुचित संसाधनों की उपलब्धता होने पर प्रायः व्यवहारिक रूप धारण कर लेती है। इस दृष्टि से प्रवास को व्यक्ति के जीवन का उतना ही नैसर्गिक अवयव माना जा सकता है जितना कि उसकी सामुदायिक जीवन, साहित्यिक सृजन, पर्यटन इत्यादि जैसी अन्य उद्दात्त अपेक्षाएं। यही कारण है कि भारतीय समाज में भी प्रवास की प्रवित्तियां काफी पुराने समय से चली आ रही हैं और वर्तमान समय में भी देश में एक ऐसा वर्ग है जो संसार के अन्य में देशों में प्रवास हेतु उचित अवसर की तलाश में बाटें जोह रहा है। दूसरे शब्दों में, मनुष्य के जीवन में और विशेषकर भारत के सन्दर्भ में, प्रवास की महत्ता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व हजारों की संख्या में भारतीयों ने अपनी मातृभूमि को छोड़कर संसार के अन्य दूरदराज के देशों में प्रवासी गिरमिटिया मजदूर बनने से कोई बहुत ज्यादा गुरेज नहीं किया था। वही मनोवृत्ति कदाचित उतनी ही वेग में आज भी देश में अच्छी संख्या में लोगों के अन्दर देखी जा सकती है। इस प्रकार प्रवास की आकांशा एक शास्वत सत्य के रूप में भारत के सर्वसमाज में काफी दीर्घकाल से विद्यमान प्रतीत होती है। इसी तथ्य को दृष्टिगत करते हुए सुषम बेदी और रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में चित्रित प्रवासी जीवन के विविध आयामों का विस्तार से अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में इस तथ्य को प्रमुखता से रेखांकित किया गया है कि प्रत्येक प्रवास की अपनी पृथक परिस्थिति और संदर्भ होता है जिसके कारण साधारणतया सामान प्रतीत होने के बावजूद हर प्रवास के अपने अलग अलग मायने और निहितार्थ होते हैं। इसी परिकल्पना को सुषम बेदी और रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में उनके अपने अपने निवास के देशों में रहने वाले प्रवासी भारतीयों के जीवन के विविध पक्षों के अनुशीलन द्वारा उद्घाटित किया गया है। प्रस्तुत शोध की मूल प्राप्ति यह है कि देश, काल और परिस्थितियों की विभिन्नता के चलते विभिन्न देशों में होने वाला भारतीयों का प्रवास अपने आप में अलग अलग कहानी कहता प्रतीत होता है जिसके प्रमाण स्वरुप हम सुषम बेदी द्वारा अमेरिका में बसे प्रवासी भारतीयों और रामदेव धुरंधर द्वारा मॉरिशस में बसे प्रवासी भारतीयों की जीवन गाथाओं के वृहत चित्रण के रूप में देख सकते हैं।